अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

नारीलोक

लिखें शक्ति की नई ऋचाएं, अनुशासन के दीप जलाएं

अंक 269 | पंजीकृत कार्यालय : 'रोहिणी', अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल, लाडनूं (राजस्थान) | दिसम्बर 2020

ऊर्जावाणी

नैतिक वाणी

- नैतिकता जीवन का यथार्थ है, जो जिया जा सकता है और अनुभव किया जा सकता है।
- नैतिकता की छोटी सी परिभाषा है – तुम दूसरों से जैसा व्यवहार चाहते हो, वैसा व्यवहार दूसरों के साथ स्वयं करो।
- नैतिकता के फलित है – उदारवादी विचार, निष्कपट व्यवहार, किसी को धोखा न देने की मनोवृत्ति, दूसरों को सहने की क्षमता।
- सामाजिक दायित्व बोध से नैतिकबल फिर जागे। आध्यात्मिक बल का संबल पा, मानव मूर्च्छा त्यागे।
- अन्तःशुद्धि व व्यवहार शुद्धि का नाम नैतिकता है।
- समाज की रचना का मूल नैतिकता ही है।

आचार्य श्री तुलसी

नैतिक वाणी

नैतिकता शून्य धर्म ने धार्मिक कट्टरता का बढ़वा दिया। धर्म गौण हो गया, सम्प्रदाय मुख्य हो गए। अपेक्षा यह है कि धर्म मुख्य रहे और सम्प्रदाय गौण हो। इस संदर्भ में अणुव्रत ने एक नया दृष्टिकोण दिया। उसने सम्प्रदाय मुक्त धर्म की अवधारणा दी। अणुव्रत केवल धर्म है, वह सम्प्रदाय नहीं है, किसी सम्प्रदाय से जुड़ा हुआ ही नहीं है। यह जैन, बौद्ध, वैदिक, इस्लाम, ईसाई धर्म नहीं है। इस दृष्टि से इसे निर्विशेषण धर्म कहा जा सकता है।

आचार्य श्री महाप्रज्ञ

अनमोल आशीर्वाद

- सही दिशा में शक्ति का नियोजन करने वाला व्यक्ति ही सफलता प्राप्त करता है।
- भाग्य की चिन्ता नहीं, सत्पुरुषार्थ करो। भाग्य स्वतः अच्छा हो जायेगा।
- समय धन है। उसका सदुपयोग करो। व्यर्थ कार्यों में उसे व्यर्थ मत करो।
- जब तक सक्षम हो, खूब सेवा कर लो, अक्षम होने के बाद तुम सेवा लेने के अधिकारी बन जाओगे।

आचार्य श्री महाश्रमण

नैतिक दिशाबोध

नैतिक उन्नति का आधार है नैतिक विचार। विचार का प्रभाव आचार पर होता है और आचार विचार से पुष्ट होता है। विचार और आचार दोनों की पवित्रता के लिए संकल्प शक्ति को विकसित करने की आवश्यकता है। संकल्प शक्ति का विकास होने से ही विचार आचार में प्रतिबिंबित होता है। अणुव्रत अतीत की स्मृतियों और भविष्य की कल्पनाओं से मुक्त होकर वर्तमान को नीतिमान बनाने का दर्शन होता है। फिर दर्शन को आधार मानकर चलने से ही जीवन के मरूस्थल में नैतिक ताप की लहर आती है।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा

अध्यक्षीय

उपेक्षित होता बुढ़ापा - कारण, निवारण

प्रिय बहनों,

सादर जय जिनेन्द्र,

यौवन उफनती स्वच्छंद धारा। इस धारा का प्रवाह समय के साथ-साथ शनैः-शनैः मंद पड़ते-पड़ते जब ठहराव की सी स्थिति को प्राप्त हो जाता है उस अवस्था को बुढ़ापा कहते हैं। यौवन यदि मानव जीवन की सुनहरी, रूपहली दोपहर है तो बुढ़ापा शांत नीर व संध्या बेला। यह शाश्वत सत्य है कि दुपहर चाहे कितनी सुनहरी, रूपहली व प्रखर हो अंततोगत्वा उसे सांयम् शरणम् गच्छामि कहना ही पड़ता है।

परिवार आधार है व्यक्ति घटक है परिवार उस संस्था का नाम है जिसमें सुख-दुःख दोनों बंटकर भोगे जाते है परिवार स्नेह के ताने-बाने से बुना वह परिवेश है जिसमें पारिवारिक सदस्य अपना सर्वस्व न्यौछावर करके एक-दूसरे की समस्याओं के समाधान के लिए हर समय तत्पर रहते हैं। परिवार में मुखिया की अहं भूमिका होती है वे अपने जीवन में आए उतार चढ़ावों से अनुभवी होते है जो अपने अनुभव से संकट के क्षणों में परिवार को उबार लेते हैं।

हमें बचपन से ही मातृ देवो भवः पितृदेवों भवः जैसे सूत्र के माध्यम से माता-पिता को देवता के रूप में पूजने के संस्कार दिए है क्योंकि माता-पिता सृष्टि के मूल है हमारा संबंध सबसे जन्म के बाद होता है पर माता-पिता से सम्बन्ध जन्म से पहले होता है।

तेरापंथ धर्मसंघ एक जीवंत धर्मसंघ है इसमें श्रद्धा, सेवा एवं समर्पण को विशेष महत्व दिया जाता है। इस संघ में रूग्ण, वृद्धों, अग्लान की सेवा बड़े मनोभाव से की जाती है। इसका जीवंत उदाहरण है परम पूज्य आचार्य महाश्रमणजी कोई भी साधु-साध्वी बीमार हो जाते है तपस्या होती है तो आप बार-बार दर्शन देते हैं उनको विशेष सुविधा उपलब्ध करवाते हैं उनकी सुविधा का पूरा ध्यान रखते हैं।

इतिहास में वर्णित आता है दस अध्यापकों के गौरव से ज्यादा गौरव एक आचार्य का होता है। सौ आचार्यों से ज्यादा गौरव एक पिता का होता है। एक हजार पिताओं से ज्यादा गौरव एक माता का होता है पर वर्तमान युग में माता-पिता की आभा मंद होती जा रही है। जिस भारत में वसुधैव कुटुम्बकम् का संदेश अनुगूंजित होता था। वहाँ परिवार की शान कहे जाने वाले बड़े बुजुर्ग आज परिवार में अपने ही अस्तित्व को तलाशते नजर आ रहे हैं। तिनका-तिनका जोड़कर अपने बच्चों के लिए आशियाना बनाने वाले ये पुरानी पीढ़ी के लोग अब खुद आशियाने की तलाश में भटक रहे हैं। जिन मां-बाप ने खून-पसीना एक कर बच्चों को पढ़ाया लिखाया व बड़ा किया आज भरपेट भोजन के लिए अपने ही बच्चों की सेवा चाकरी करनी पड़ती है।

जब एक पिता अपने लाडले की अंगुली थामकर चलना सिखाता है तो दिल में कहीं एक आवाज उठती है कि कल में बुढ़ा हो जाऊं तो मेरे लाडले तू भी इसी तरह मेरा हाथ पकड़कर सहारा देना। पर यह सच्चाई है कि झुर्रीदार चेहरा हमेशा हासिए पर होता है। इसका प्रमुख कारण है पश्चिम संस्कृति का अन्धानुकरण। बगैर सोचे समझे पश्चिमी प्रणाली को अपना रहे है। इस व्यस्ततम जिन्दगी में समयाभाव

के कारण सास-ससुर व मां-बाप से किनारा कर लेते हैं। भले ही हमें प्यार दोस्तों से या और कहीं से मिल जाए परन्तु संस्कार, आशीर्वाद एवं दुआएं तो मां-बाप से ही मिलती है। आज के बच्चों का बीज मंत्र है।

''मैं बीज बोता हूँ फल की चिंता क्या, खुद सावन हूँ मरूस्थल की चिन्ता क्या।
हम मस्ताने हर समय अपनी मौज में है, आज बिताया फिर कल की चिंता क्या।।''

बुजर्गो पर हमेशा आरोप लगाए जाते है कि वे समय के साथ नहीं चलते। सदा मन की करना चाहते हैं। उन्होंने जो सीखा है वही बच्चों पर लादना चाहते हैं। बुढ़ापे के साथ बचपन भी आ जाता है बच्चों को तो फिर भी संभाला जा सकता है। पर बुजुर्गो को संभालना बड़ा मुश्किल है ये आरोप कुछ हद तक सही भी हो सकते है। पर यदि स्वयं को उनके स्थान पर रखकर देखें तो ये आरोप अपने आप धराशायी हो जाते हैं।

घर का मुखिया बनना इतना आसान नहीं है उसकी हालत टीन के उस शेड के जैसी होती है जो बारिश, तूफान, ओलावृष्टि झेलता है लेकिन उसके नीचे रहने वाले कहते हैं यह आवाज बहुत करता है और गरम भी बहुत जल्दी होता है।

उपभोक्ता समाज में बुजुर्ग ''खोटा सिक्का'' समझे जाने लगे हैं। जब घर में कोई बीमार हो जाता है, जन्म होता है, शादी होती है तो मां-दादी जल्दी से घरेलू उपचार व नेकचार बता देती है। त्यौहार बार में बड़ों से ही रीति रिवाज पूछे जाते हैं। किसी सगे सम्बन्धी की मौत हो जाती है ऐसे समय में क्या करना चाहिए। बुजुर्गो के सिवाय कौन बतायेगा? अपने पोते-पोतियों पर जान छिड़कने वाले दादा-दादी की उपेक्षा क्यों की जाती है? पता नहीं क्यों बुढ़े मां-बाप का इतना भार महसूस होता है। बहुत से घरों में सन्नाटा पसरा है सुनसान रातों में भी अपनों से बिछुड़ने के दर्द की सिसकियां सुनाई पड़ती है। अपनों का स्पर्श पाने के लिए टकटकी लगाए दरवाजे पर देखते रहते हैं कि शायद हमारा कोई मिलने आ जाए।

जब एक बार अखबार में पढ़ा कि शहर के एक वृद्धाश्रम में दस वर्षो तक किसी भी बुजुर्ग को नहीं लिया जाएगा। क्योंकि वहां की सारी सीटें बुक हो चुकी है। यह दिल दहला देने वाली खबर आज के बदलते समाज को एक करारा चांटा है।

बहनों हम सभी को मिलकर परिवार में कोशिश करनी है कि बुजुर्गो को हर मान-सम्मान व उचित आदर मिलें। हमें देखकर हमारी आने वाली पीढ़ी भी वही करेगी। बुजुर्गो को बुढ़ापा भार नहीं उपहार लगे यह तभी संभव है कि हम सब मिलकर उनको इज्जत दें, सम्मान दें।

आपकी
पुष्पा वैद

LEARN • UNLEARN • RELEARN

LEARN • UNLEARN • RELEARN

प्यारी बहनों,

जीवन एक प्रतिध्वनि है। (Life is Echo) जब हम गालियां देते हैं तो हमें गालियां मिलती है। जब हम शुभकामना करते हैं तो दुआएं प्राप्त होती है। हमारा चिंतन हमारा व्यवहार पुनः हमारे पास लौटकर आता है हम जानते हैं जैसे जिन्दगी मौत में बदली है वैसे ही जवानी, बुढ़ापे में बदल जाती है यह एक शाश्वत सत्य है कि बुढ़ापा सबको आना है, विचारों में अनेकान्त होना जरूरी है। मैं सोचती हूँ वही सही है बल्कि ऐसा सोचे कि माँ-पिताजी कह रहे हैं शायद वो भी सत्य है। हर चीज को दोनों दृष्टिकोण से सोचें। कोई भी व्यक्ति परिपूर्ण नहीं होता, कमी सबमें होती है असहिष्णु व्यक्ति प्रतिकूल स्थिति में शीशे की तरह तड़क जाता है। जो सहता है वह रहता है। आचार्यश्री तुलसी की यह पंक्ति

मेरी हरकत सहे सहज वह, मैं भी उसको क्यों न सहूं
साथी रूप निभाना है तो सहिष्णुता के साथ रहूं।

दिसम्बर माह का करणीय कार्य...

बड़े बुजुर्गों की चित्त को समाधि मिले, इस पर जूम के द्वारा संगोष्ठि का आयोजन करें...

आओ बनायें 2nd inning को खुशहाल ! बेमिसाल !!

Learn -Unlearn-Relearn के अंतर्गत कार्यशाला का आयोजन –

LEARN -

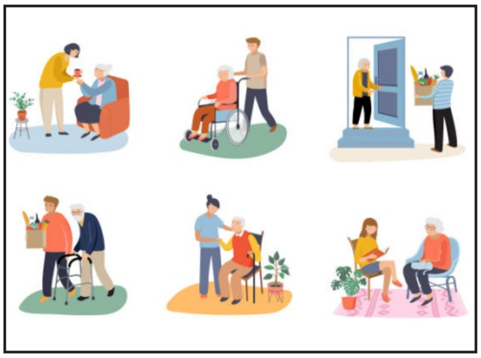

1. जनरेशन गेप होने से विचार नहीं मिल पाते हैं सामंजस्य बढ़ाएं।
2. बीमारी, बुढ़ापा से चिड़चिड़ापन आ जाने से व्यवहार बदल जाता है। बुजुर्गों की सेवा करना हमारा दायित्व है सहिष्णुता अपनाएं।
3. माता-पिता की दुआएं ही हमारी सुख-समृद्धि का राज है।

UNLEARN -

1. अकर्मण्यता जीवन का अभिशाप है
2. दूसरों की देखा-देखी से घर उजड़ता है।
3. पदार्थ प्रतिबद्धता तनाव का कारण है, क्यों होते हैं सम्बन्ध तार-तार, क्यों बनता है जीवन भार। स्वार्थ भावना पतन का कारण है।

RELEARN -

1. हम अपने माता-पिता को याद करें जिन्होंने अपने माता-पिता की कितनी सेवा की। जैसा बीज बोते हैं वैसा ही फल मिलता है।
2. सकारात्मक सोच रखते हुए सबकी दिल से परवाह करें।
3. बड़े बुजुर्ग भोजन में नमक की तरह होते हैं नमक के बिना भोजन का स्वाद नहीं वैसे ही बुजुर्गों बिना घर आबाद नहीं।

जैन स्कॉलर परियोजना

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की जैन स्कॉलर परियोजना के तहत जैन स्कॉलर निर्देशिका डॉ. मन्जूजी नाहटा के निर्देशन में जूम के माध्यम से एक माह तक वर्चुअल कक्षाएं चली (12 अक्टू. से 10 नवम्बर) जिसमें सभी विषयों का गहनता से अध्ययन किया गया। देश-विदेश से करीब 27 प्रतिभागियों ने इसमें भाग लिया। दो विषयों की मौखिक परीक्षा ली गई। जनवरी मध्य से पुनः बाकी रहे विषयों का अध्ययन जारी रहेगा। शिक्षा प्रदाता श्रीमती सुषमा जी आंचलिया, श्रीमती राजू जी दुगड़, श्रीमान् विकास जी गर्ग, श्रीमती वीरबाला जी छाजेड़, सुश्री रंजना जी गोठी आदि प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण दिया गया। सभी विद्यार्थीगण के प्रति शुभकामनाएं।

रंगोली प्रतियोगिता के परिणाम

Art Khazana

गत नवम्बर माह दीपावली पर हमने रंगोली प्रतियोगिता आयोजित की थी। देशभर से काफी रंगोलियां प्राप्त हुई। हमारे लिए मुश्किल हो गया जज करना कि किसको प्रथम, द्वितीय, तृतीय करें। एक-एक बहन का श्रम वाकई काबिले तारीफ था। पर रिजल्ट तो निकालना ही था हमारे निर्णायकों द्वारा सात प्रतिभागियों को चयनित किया गया वो निम्न है :-

1. सुमन सुराणा - शिलोंग
2. मीना बडाला - मुम्बई / रिया बोथरा - नेपाल (काठमांडू)
3. भूमिका पटावरी - सूरत / सुधा कोठारी - बीकानेर
4. कोमल सांखला - औरंगाबाद
5. प्रमिला कोठारी - अहमदाबाद

सभी विजेताओं को अखिल भारतीय महिला मंडल की ओर से हार्दिक बधाई

स्व से संकल्प

भारतीय अध्यात्म परम्परा में परमात्मा और सुगुरु की भक्ति, स्तुति को बहुत महत्व दिया गया है। वस्तुतः परम के प्रति समर्पण और एक निष्ठ प्रेम की अभिव्यक्ति ही भक्ति है। अध्यात्म के इसी पवित्र भूमिका पर स्त्रोत एवं स्तुति - काव्यों की रचना हुई। कल्याण मंदिर स्त्रोत की रचना भी इसी भाव भूमि पर की गई और कल्याण मंदिर एक प्रभावक स्त्रोत के रूप में प्रतिष्ठित हो गया।

कंठस्थ ज्ञान

इस बार कल्याण मंदिर स्त्रोत का 5 वें श्लोक से लेकर 8 वें श्लोक तक याद करने का लक्ष्य रखें।

इस बार 13 वें तीर्थंकर श्री विमल प्रभु की गीतिका याद करने का लक्ष्य रखें।

कन्यामंडल करणीय कार्य

प्यारी बेटियों,

सादर जय जिनेन्द्र

भगवान महावीर निर्वाणोत्सव के रूप में दीपावली का त्यौहार हमने परंपरागत अंदाज में मनाया। दीपावली दीपों की रोशनी की क्रमबद्ध श्रृंखला है। यह रोशनी हमारे आत्म कल्याण की साधक बनें, हमारे जीवन को जगमगाती रहे यही मंगलकामना।

दिसम्बर माह साल का आखिरी महीना, बीते वर्ष से संबोध पाने का समय, चातुर्मास का सुखद समापन, शीतकाल का प्रारंभ व नव वर्ष के आगमन की तैयारियाँ। वर्ष 2020 समाप्ति की ओर है। इस वर्ष हमने Lockdown में Technology का बेहतरीन उपयोग करते हुए अपना आध्यात्मिक व भौतिक विकास करने का प्रयास किया और आगे भी हमारा विकास का यह क्रम जारी रहेगा ऐसा हमारा विश्वास है। इसी को ध्यान में रखते हुए हम अपनी बेटियों के चहुँमुखी विकास के लिए लेकर आए हैं एक शानदार तोहफा –

अपनी Smart Girls के लिए –

Smart Girl Project

"To Be Happy

To Be Strong"

A special online designed program for emotional empowerment of adolescent girls. Special training by active trainers.

इस Project के लिए कुछ Details :–

12 Hours Course for 6 Days.

Age Group - 13 to 18 Years.

18 to 25 Years

1. Self Awareness - 60 mnts
2. Communication and Relationships - 120 mnts
3. Menstruation and Hygiene - 90 mnts
4. Self Esteem and Self Defence - 120 mnts
5. Choises and Decisions - 90 mnts
6. Friendship and Temptation - 90 mnts
7. One session for parents - 90 mnts
   and with parents - 30 mnts

यह Project हमारी बेटियों के लिए काफी उपयुक्त व उपयोगी होगा ऐसा हमारा विश्वास है। इससे हमारी कन्याएं कैसे सही निर्णय ले सके, Positive approach रखें, जीवन में आने वाले Challenges का कैसे सामने करे आदि महत्वपूर्ण विषयों पर प्रशिक्षण का क्रम रहेगा। इस कार्यशाला से जुड़कर आप Mentally Physically और Emotionally सक्षम बन पाएंगी ऐसा हमारा पूर्ण विश्वास है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम से जुड़ने के लिए आप ABTMM Group में पूर्ण Active रहें। पूरी रूपरेखा विस्तार से Group में प्रेषित की जाएगी। कोई भी कन्या मंडल की कन्याएं वंचित न रहे।

परम की ओर प्रस्थान करे – करें छोटे–छोटे प्रत्याख्यान।

आपकी दीदी
रमन पटावरी

इस माह का संकल्प : 1 घंटे का चौविहार प्रत्याख्यान प्रतिदिन

दीपोत्सव

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में अखिल भारतीय तेरापंथ कन्या मंडल के द्वारा दीपावली के शुभ पर्व तेरापंथ समाज की कन्याओं हेतु अभिनव कार्यक्रम दीपशिखा का आयोजन virtually zoom app पर दिनांक 22.11.2020 को किया गया।

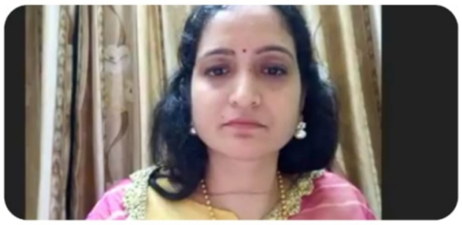

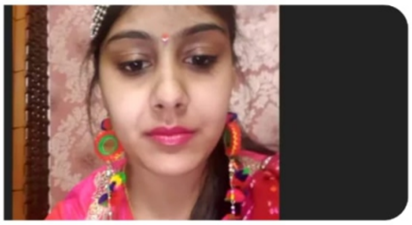

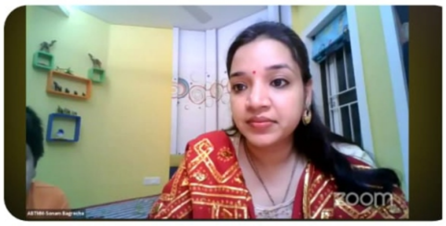

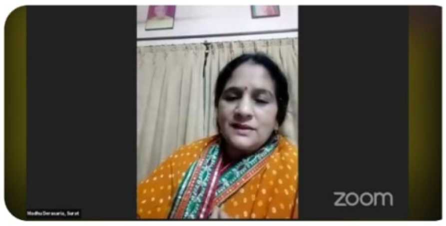

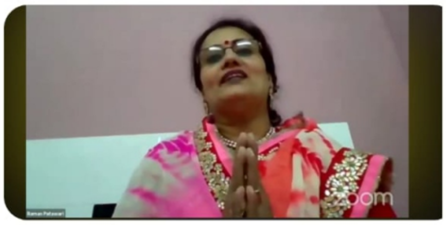

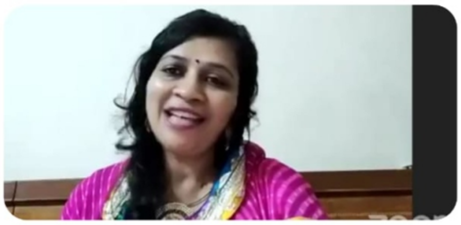

कार्यक्रम का आगाज महातपस्वी पूज्य गुरुदेव के मंगल पाठ श्रवण के साथ हुआ। राष्ट्रीय कन्या मंडल प्रभारी, श्रीमती रमन जी पटावरी, सह प्रभारी श्रीमती नमिता जी सिंगी, राष्ट्र संयोजिका श्रीमती प्रज्ञा नौलखा बांठिया, सुश्री याशिका जी खटेड़ ने अनुपम गीत की प्रस्तुति देकर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। दीपशिखा गीत को हैदराबाद की सुश्री खुशी कठोतिया ने अपने सुमधुर स्वर में प्रस्तुत किया। हैदराबाद कन्या मंडल की मोतियों द्वारा मंगलाचरण की अभिव्यक्ति दी गई। राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती पुष्पा जी बैद ने इस कार्यक्रम में पधारे सभी महानुभावों , कन्याओं का स्वागत अपने अध्यक्षीय वक्तव्य द्वारा किया। रंगीला राजस्थान नृत्य की प्रस्तुति जोधपुर तथा गंगाशहर कन्या मंडल द्वारा दी गई। कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए 'मेरी प्रेरणा' प्रतियोगिता का कुशल संचालन राष्ट्रीय संयोजिका श्रीमती प्रज्ञा जी नौलखा बांठिया ने किया, जिसमें कुल 35 प्रतिभागी थे। इस प्रतियोगिता के निर्णायक रहे अभातेममं महामंत्री श्रीमती तरुणा जी बोहरा एवं सह मंत्री श्रीमती मधु जी देरासरिया। इस प्रतियोगिता को दो चरण में रखा गया, प्रथम चरण में 35 एवं दूसरे चरण में 5 प्रतिभागी रहे ,जिसमें प्रथम द्वितीय एवं तृतीय का चयन निर्णायकों द्वारा प्रश्नोत्तरी, वेशभूषा, भाषा शैली के आधार पर किया गया। महामंत्री तरुण जी बोहरा ने विभिन्न उदाहरणों के द्वारा कन्याओं को संवर्धित होने की प्रेरणा दी। सह मंत्री मधु जी देरासरिया ने कन्याओं को देव, गुरु और धर्म के प्रति पूर्ण निष्ठावान रहने की प्रेरणा देते हुए प्रथम, द्वितीय और तृतीय की घोषणा की। मुंबई कन्या मंडल ने अपने वीडियो के द्वारा यह संदेश दिया कि हम अपने त्योहारों पर देश ही नहीं बल्कि विदेशी लोगों को भी आमंत्रित कर उन्हें अपनी परंपरा रीति-रिवाज तथा संस्कृति से रुबरू करा सकते है। साथ ही एनिमेटेड फिल्म द्वारा दीपावली मनाने के पीछे की कहानी जो मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम और भगवान महावीर से जुड़ी है , दिखा कर सब में नई ऊर्जा का संचार किया। कार्यक्रम की जान रही सुश्री याशिका जी खटेड़ द्वारा प्रस्तुत गेम शो 'किसमें कितना है दम, जिसमें देश विदेश से लगभग 54 टीम ने हिस्सा लिया। याशिका जी ने अपने दमदार अंदाज में इस गेम शो को बहुत ही रोचक बनाया, जिसमें खेलने वाले को ही नहीं बल्कि दर्शकों को भी बहुत आनंद आया ।इस गेम शो की विजेता टीम तथा रनर अप टीम को अभातेममं की तरफ से 2100 एवं 1500 की राशि पुरस्कार स्वरूप प्रदान की गई। गुजरात स्पेशल डांस की सुंदर प्रस्तुति सूरत तथा उधना कन्या मंडल द्वारा दी गई। पूर्वांचल कन्या मंडल ने बहुत ही अच्छे अंदाज से एक नाटक की प्रस्तुति दी। समय, व्यवस्था और टेक्नोलॉजी पर यह कार्यक्रम बहुत ही आकर्षक और अपने आप में खास रहा। वोट ऑफ थैंक्स लेकर प्रस्तुत हुई प्रचार प्रसार सह मंत्री, श्रीमती सोनम जी बागरेचा के आभार ज्ञापन के साथ यह कार्यक्रम संपन्न हुआ।

तेरापंथ महिला मंडल औरंगाबाद द्वारा मराठवाड़ा स्तरीय "शक्ति संवर्धन" कार्यशाला का वृहद आयोजन

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित एवं तेरापंथ महिला मंडल औरंगाबाद द्वारा आयोजित महाराष्ट्र में मराठवाड़ा स्तरीय "शक्ति संवर्धन" कार्यशाला का वृहद आयोजन किया गया। दिनांक 5 नवम्बर 2020 को ऑनलाइन मीटिंग द्वारा हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ संघ शिरोमणि गुरुदेव आचार्य श्री महाश्रमण जी के मंगल पाठ द्वारा हुआ। महाराष्ट्र प्रभारी श्रीमती विमला जी नाहटा ने नमस्कार महामंत्र का उच्चारण किया। मंगलाचरण की मंगल सुमधुर प्रस्तुति श्रीमती मुक्ताजी दुगड़ ने संवर्धन गीत से की। औरंगाबाद तेरापंथ महिला मंडल की उत्साही, कर्मठ अध्यक्ष सौ. सुनीता जी सेठिया ने राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती पुष्पा जी बैद एवं महामंत्री श्रीमती तरूणाजी बोहरा, राष्ट्रीय वरिष्ठ उपासक सुरेन्द्र जी सेठिया आदि क्षेत्रों से उपस्थित अध्यक्ष, मंत्री पदाधिकारी सभी का शब्द सुमनों से भावभीना स्वागत किया। संवर्धन विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए। महाराष्ट्र प्रभारी सौ. निर्मला जी चंडालिया ने साध्वी प्रमुखाश्री जी का संदेश वाचन किया और महाराष्ट्र के क्षेत्रों की जानकारी दी। साक्री से जोशीललाजी ने कहा - मन में हौंसला हो तो सभी कार्य सफल हो जाते है मन में आत्म-विश्वास होना चाहिए। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की ट्रस्टी श्रीमती सूरज जी बरड़िया ने कहा कि महिला समाज का गौरव है। "जिस घर की नारी संस्कारी, वह घर नारी का आभारी"। औरंगाबाद महिला मंडल एवं कन्या मंडल द्वारा संवर्धन गीत की नृत्य द्वारा सुन्दर प्रस्तुति हुई। अखिल भारतीय महिला मंडल के उत्साही, ममतामयी, कर्मठ अध्यक्ष श्रीमती पुष्पा जी बैद ने अपने भावों की प्रस्तुति में कहा - संसार में सबसे बड़ी शक्ति नारी है। संकल्प शक्ति है। औरंगाबाद महिला मंडल द्वारा 16 सतियों पर नृत्य की सुन्दर प्रस्तुति हुई। जालना महिला मंडल द्वारा आत्म शक्ति पर सुंदर शब्द चित्र प्रस्तुत हुए।

राष्ट्रीय वरिष्ठ उपासक सुरेन्द्र सेठिया ने संवर्धन का अर्थ - वृद्धि करना, बढ़ना बताया। शक्ति का सही रूप सहिष्णुता बताया। बीड क्षेत्र द्वारा संकल्प शक्ति पर सुंदर प्रस्तुति हुई। महासभा के कार्यकारिणी समिति के सदस्य डॉ. अनिलजी नाहर ने कहा कि नारी शक्ति है, नारी अभिमान है, नारी गौरव है।

धूतिया एवं शहादा में क्रमश नव दुर्गा की शक्ति एवं गुरु शक्ति पर सुन्दर प्रस्तुति हुई। कोलकाता महासभा के प्रभारी श्री महेन्द्र जी मरलेचा ने कहा कि महिलाओं को स्वयं के फैसले स्वयं लेने का अधिकार है। महिला सशक्तिकरण ही नारी संवर्धन है। वह अपने हर कार्य में आगे बढ़े। राष्ट्रीय महामंत्री श्रीमती तरूणाजी ने कहा कि एकता की शक्ति अद्‌भुत है।

"हे अनन्त ऊर्जाआत्मा में, महावीर की वाणी, सबल प्रेरणा गुरु तुलसी से मिली है कल्याणी।
महाप्रज्ञ का दिशा बोध ज्योतिर्मय झरना है। शक्ति संवर्धन करना है।

शक्ति का सही दिशा में नियोजन करें। अंबेजोगाई क्षेत्र की मंत्र शक्ति पर प्रस्तुति हुई। औरंगाबाद तेरापंथ युवक परिषद् के अध्यक्ष श्रीमान मयूर जी आच्छा ने अपनी भावाव्यक्ति दी। मुमुक्षु अर्हम रूणवाल द्वारा संयम गीत प्रस्तुत किया, जो मात्र 13 वर्ष की उम्र के हैं। उनकी 28 नवम्बर को दीक्षा गुरु चरणों में होने जा रही है। पत्रकार परिषद् के मुख्य लोकमत समाचार पत्र के एडिटर श्री मुकेश कुमार जी सोनी ने अध्यक्ष महोदया से इंटरव्यू के तौर पर कोरोना के समय यह संवर्धन कार्यशाला कैसे उपयोगी होगी? इस विषय पर वार्तालाप किया, राष्ट्रीय अध्यक्ष ने उचित समाधान दिया। इस कार्यशाला में पत्रकार परिषद् से लगभग 12 से 17 विभिन्न एडिटर भी जुड़े। मीनाक्षी साबद्रा ने प्रेक्षावाहिनी में अधिक से अधिक सभी को जुड़ने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम का सुन्दर संचालन श्रीमती चेष्टाजी सुराना ने किया। औरंगाबाद तेरापंथ महिला मंडल की मंत्री श्रीमती कविता जी मर्लेचा ने सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों का आभार एवं कृतज्ञता ज्ञापित की। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने औरंगाबाद के कार्यक्रम की सराहना की एवं कार्यक्रम का समापन किया।

सेलम - तमिलनाडु स्तरीय संवर्धन करें अनुशासन में कार्यशाला का आयोजन

सेलम - अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल, सेलम के तत्वावधान में तमिलनाडु स्तरीय समर्पण संवर्धन कार्यशाला का आयोजन जूम एप द्वारा वर्चुअली किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ परामर्शक श्रीमती संतोष चौरड़िया कोलकाता के उद्‌गारों से हुआ। भव्य स्वागत एवं उद्‌घाटन तमिलनाडु संभाग के इरोड, मदुरै, शिवाकासी, कोयम्बटूर, कांचीपुरम, चैन्नई, अरकोणम आदि 17 शाखा मंडलों द्वारा राष्ट्रीय पदाधिकारी ट्रस्टी जन का स्वागत अभिनंदन किया गया। ऊर्जामयी मंगलाचरण के साथ ही असाधारण साध्वी प्रमुखा श्रीजी के संदेश का वाचन तमिलनाडु क्षेत्रीय प्रभारी माला कातरेला द्वारा किया गया। सेलम महिला मंडल अध्यक्ष सरिता दुगड़ ने अपनी उत्साही वाणी से मन के भावों को प्रेषित किया। चिंतनशील, सृजनशील राष्ट्रीय उपाध्यक्ष नीलम सेठिया ने आत्मोत्थान, गुरु के प्रति सर्वस्व समर्पण के समीकरण बनाते हुए अपने मन के मार्मिक उद्‌गारों को उकेरा। वर्चुअली स्मृति चिन्ह द्वारा अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती पुष्पा बैद का स्वागत किया। संवर्धन की सुगम राह, 5 सीख द्वारा लघुनाटिका द्वारा महिला मंडल, कन्या मंडल सेलम ने बेजोड़ प्रस्तुति दी। श्रीमती पुष्पा बैद ने कर्मठ उत्साही शक्ति सम्पन्न छोटे क्षेत्रों को विशेष दुलार देते हुए समर्पण विषय को सरल शब्दों में गूंथते हुए इच्छाओं आकांक्षाओं और अहंकार का परित्याग, संघ संघपति के प्रति अटूट श्रद्धा, पेड़ के पत्ते, पतंग की डोर, तिनके का बहना, भोरों का फूलों के प्रति, दीपक का मंदिर के प्रति समर्पण को कहानी, संदर्भ, उदाहरणों द्वारा व्याख्यायित किया। परिवार समाज राष्ट्र के प्रति संकल्पित होकर सच्चाई के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम की मुख्य वक्ता जैन स्कोलर एवं ट्रेनर संस्कृति भंडारी ने समर्पण का मतलब अपने आप को अर्पण कर देना, आत्म सम्मान खोकर कोई मुकाम हासिल न करना महाभारत के दुर्योधन का चित्रण करते हुए रश्मिरथी काव्य की पंक्तियों से संवर्द्धन की विस्तृत विवेचना की। तेरापंथ महिला मंडल एवं कन्या मंडल की संयुक्त प्रस्तुति ''संवर्धन गीत'' को स्वर देते हुए कार्यक्रम को रोचक बनाया। अभातेममं महामंत्री श्रीमती तरूणा बोहरा ने जैन तेरापंथ धर्म में जन्म लेने को अपनी किस्मत बताया। बारह छिद्रों वाले घड़े का अरिहंत के प्रति, बेम्बू व घास का मिट्टी के प्रति, परिवार समाज के रिश्तों के प्रति समर्पण को विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से विराट स्वरूप को सरल भाषा शैली में प्रस्तुत किया। आभार की रस्म मंडल कोषाध्यक्ष शालिनी लुंकड़ एवं कुशल संचालन अक्षिता बैद ने किया।

सूरत-दक्षिण गुजरात स्तरीय संवर्धन कार्यशाला का आयोजन

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में सूरत तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में दक्षिण गुजरात स्तरीय संवर्धन कार्यशाला का आयोजन जूम एप्प के माध्यम से किया गया। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती पुष्पा बैद, महामंत्री श्रीमती तरूणा बोहरा की विशेष उपस्थिति रही। कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में सूरत मेयर माननीय जगदीश पटेल व मुख्य वक्ता के रूप में युवा गौरव राजेश सुराणा उपस्थित थे। गुरुदेव के मंगल पाठ वीडियों से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। संघ महानिदेशिका साध्वी प्रमुखाजी का संदेश प्राप्त हुआ। कार्यशाला का विषय था - अनुशासन से संवर्धन। जिस पर सभी वक्ताओं ने बहुत ही सधे हुए शब्दों में विषयोक्त प्रस्तुति दी। सूरत तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती जयंती सिंघी ने सबका स्वागत किया। अभातेमम ट्रस्टी श्रीमती कनक बरमेचा, अभातेमम सहमंत्री श्रीमती मधु देरासरिया, प्रचार प्रसार मंत्री श्रीमती निधि शेखानी ने विचार व्यक्त किये। शासनश्री साध्वी श्री सरस्वतीजी का मंगल आर्शीवचन प्राप्त हुआ। संवर्धन गीतिका के माध्यम से बहुत ही सुन्दर प्रस्तुति तेरापंथ महिला मंडल व कन्या मंडल सूरत ने दी। दक्षिण गुजरात स्तरीय संवर्धन कार्यशाला में विभिन्न क्षेत्रों ने वीडियो के माध्यम से प्रस्तुतियां दी। आज के इस पुनीत अवसर पर जूम के माध्यम से अभातेमम अध्यक्ष व महामंत्री द्वारा फिजियोथेरेपी सेन्टर का उद्घाटन हुआ। साथ ही सूरत तेरापंथ महिला मंडल द्वारा अनुदान में दी जा रही 30 पैड डिस्पोजल मशीन का भी उद्घाटन किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री पूर्णिमा गादिया एवं सहमंत्री रेखा ढालावत व आभार ज्ञापन सहमंत्री कनक बरड़िया ने किया।

उदयपुर स्तरीय संवर्धन कार्यशाला का आयोजन

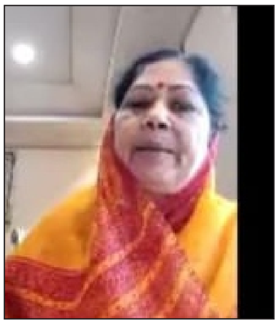

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित महिला मंडल उदयपुर द्वारा आयोजित मेवाड़ स्तरीय संवर्धन कार्यशाला का भव्य आगाज़ राजस्थान का प्रसिद्ध पधारो म्हारे देश के वीडियो द्वारा किया गया। जिसमें उदयपुर महिला मंडल द्वारा इस वेबिनार मीट में जुड़ने की मीठी मनुहार की गई। कार्यक्रम की शुभ शुरुआत करुणा के महासागर पूज्य प्रवर के श्री मुख से मंगल पाठ से की गई। तत्पश्चात राष्ट्रीय ट्रस्टी श्राविका गौरव श्रीमती प्रकाश जी तातेड़ द्वारा उच्चारित नमस्कार महामन्त्र से पूरी कार्यशाला अध्यात्मय बन गयी। उदयपुर में विराजित शासन श्री साध्वी श्री मधुबाला जी ने अपने प्रेरणा पाथेय से अपरिग्रह विषय का बहुत ही गहराई से विश्लेषण किया। स्वागत की कड़ी में उदयपुर महिला मंडल की सक्रिय सदस्य सोनल सिंघवी एवं ग्रुप ने बहुत ही रोचक प्रस्तुति द्वारा वेबिनार मीट से जुड़ी सभी बहनों का स्वागत अभिनंदन किया। स्वागत के स्वर मुखर हुए महिला मंडल उदयपुर की अध्यक्ष श्रीमती सुमन डागलिया के मुख से मेवाड़ स्तरीय संवर्धन कार्यशाला में पधारी राष्ट्रीय अध्यक्ष महामंत्री उनकी पूरी टीम का एवं अपनी उपस्थिति दर्ज कराने वाली पूरे मेवाड़ से जुड़ी हर बहन का झीलों की नगरी उदयपुर से स्वागत बड़े ही उत्साह के साथ किया। ममतामयी सहृदयी असाधारण साध्वी प्रमुखा श्री जी द्वारा प्रदत्त शुभकामना संदेश का वाचन मेवाड़ स्तरीय संगठन यात्रा की क्षेत्रीय प्रभारी राष्ट्रीय सहमंत्री श्रीमती नीतू जी ओस्तवाल ने किया साथ ही बहुत ही संक्षिप्त में अपनी भावाभिव्यक्ति की। स्वागत के इसी क्रम में झीलों की नगरी अध्यात्म की नगरी उदयपुर से पूरे मेवाड़ का प्रतिनिधित्व करने वाली अति उत्साही अध्यक्ष श्रीमती सुमन डागलिया ने अपने शब्द सुमनों से इस कार्यशाला से जुड़ी सभी बहनों का वर्चुअली स्वागत अभिनंदन किया। कार्यक्रम को अपने साज बाज से गुंथित करते हुए राष्ट्रीय महामंत्री श्रीमती तरुणा जी बोहरा ने अपने ऊर्जस्वी वक्तव्य से नया निखार दे दिया। कोरे कागज पर रंगीन चित्र उकेर दिए। कार्यशाला की सफलता बड़ो के आशीर्वाद से होती है प्रतिपक्ष नेता गुलाबचन्द जी कटारिया ने अपनी शुभकामनाएं प्रेषित की जिसका वाचन तेयुप अध्यक्ष उदयपुर के अजीत जी छाजेड़ ने किया और पूरे तेयुप की तरफ से शुभकामनायें दी इसी कड़ी में उदयपुर सभा अध्यक्ष श्रीमान अर्जुन जी खोखावत ने भी इस कार्यशाला के प्रति पूरी सभा की तरफ से शुभकामनाएं प्रेषित की।

वर्तमान में उभरती हुई असन्तुलन जीवन शैली का प्रवीणा जी, अंतिमा जी सिंघवी ने अपनी परिकल्पना को एक आकर्षक वीडियो में तब्दील करते हुए अपरिग्रह की दिशा में प्रस्थान करने का मैसेज दिया मेवाड़ के भीलवाड़ा आसींद क्षेत्र से बनाये वीडियो को भी बखूबी दिखाया गया। छोटे छोटे व्रतों को धारण कर श्रमणोंपासक बन इच्छाओं का अल्पीकरण कर परिग्रह से अपने आप को बचाने के बहुत सारे उपाय उदाहरणों से संदर्भो के माध्यम से समझाने वाले धीर गम्भीर कार्यक्रम के मुख्य वक्ता उपासक मोटिवेशनल स्पीकर श्रीमान राजेन्द्र जी सेठिया का संक्षिप्त परिचय श्रीमती प्रवीणा जी सिंघवी ने दिया। सेठिया जी ने अपनी धाराप्रवाह सरस सरल भाषा शैली से आज के परिपेक्ष्य में चिंतनशील विषय परिग्रह अपरिग्रह के भेद को बताते हुए बहुत ही सुंदर तरीके से समझाया। संस्था की सिरमौर अनुकुल प्रतिकूल में सम रहने वाली सकारात्मक सोच रखते हुए सभी शाखा मंडलो का समय समय पर देखरेख करने वाली जुझारू कर्मठ दायित्वों को अपनी जीवन शैली का अंग बनाते हुए आज के इस अवसर पर अपने जोशीले व्यक्तव्यों से मेवाड़ स्तरीय कार्यशाला में समुपस्थित बहनोंमें ऊर्जा संचरण किया । कार्यक्रम में उबाऊपन न आये इस हेतु एक सुंदर प्रस्तुति तेरापंथ कन्या मण्डल तेरापंथ महिला मंडल उदयपुर द्वारा संवर्धन गीत के माध्यम से दी गयी। बहुत ही शानदार प्रस्तुति रही। अंत मे आभार धन्यवाद ज्ञापित करने हेतु उदयपुर महिला मंडल की सक्रिय मंत्री सीमा बाबेल ने समस्त महिला शक्ति का जो इस वेबिनार zoom meeting से जुड़ी जिन्होंने भी अपनी प्रस्तुति आ दी ओर जिन्होंने कार्यक्रम को सफल बनाने में पूरी शक्ति लगाई उन सब के प्रति हृदय की असीम गहराइयों से आभार कृतज्ञता धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम को सुव्यवस्थित रूप से समय का अतिक्रमण किये बिना सूचीबद्ध तरीके से परिसम्पन्न करने वाली संचालन कर्ता डॉ हेमलता नाहटा एवं उषा चव्हाण ने बहुत ही कुशलता से कार्यक्रम संचालित किया ।

संवर्धन गीत

-मुनि श्री सम्बोध कुमार जी 'मेधांश'

लिये दिल में लगन,
होके पंछी मगन,
उड़े ऊँचे ऊँचे, गगन
चले नया चलन, बहे बनके पवन,करे अपना संवर्धन
ला ला ला-----------अइ अइ अ-या----ला--ला
ला ला ला ला----अ इ इ य

वो छेड़े धुन हम वो गाये सरगम,
लक्ष्य को पूरा करते जाएँ
पीछे ना मुड़े हम, आगे बढ़े बस ,
जिंदगी में इक यही सपना हो अपना रे
नूतन सदी की नई ऊर्जा हम ,
खुशियों का हो सृजन
चले नया चलन ....

इक नया सूरज, हमें उगाना है,
अ भा ते म मं का,
महाश्रमण जी के पुण्य शरण में,
चलो आग़ाज़ करे नए अभियान का
जोश से बढ़े हम अब ना रुके कदम
ख़ुशियों का हो सृजन
चले नया चलन.......

ब्रैनविटा क्वीज Grand Finale का आयोजन

अखिल भारतीय तेरापंथ महिलामण्डल द्वारा निर्देशित क्वीज ब्रेनविटा का ग्रांड फिनाले 21 नवम्बर दोपहर 2.00 बजे से ज़ूम एप पर रखा गया। वर्षभर चल रहे ब्रेनविटा क्वीज में पूरे देशभर से लगभग 4500 प्रतियोगी में टॉप 50 का ऑनलाइन लाइव क्वीज रखा गया। जिसमें 3 अलग अलग राउंड थे। बहुत ही रोचक व अलग तरीके से यह क्वीज चली।

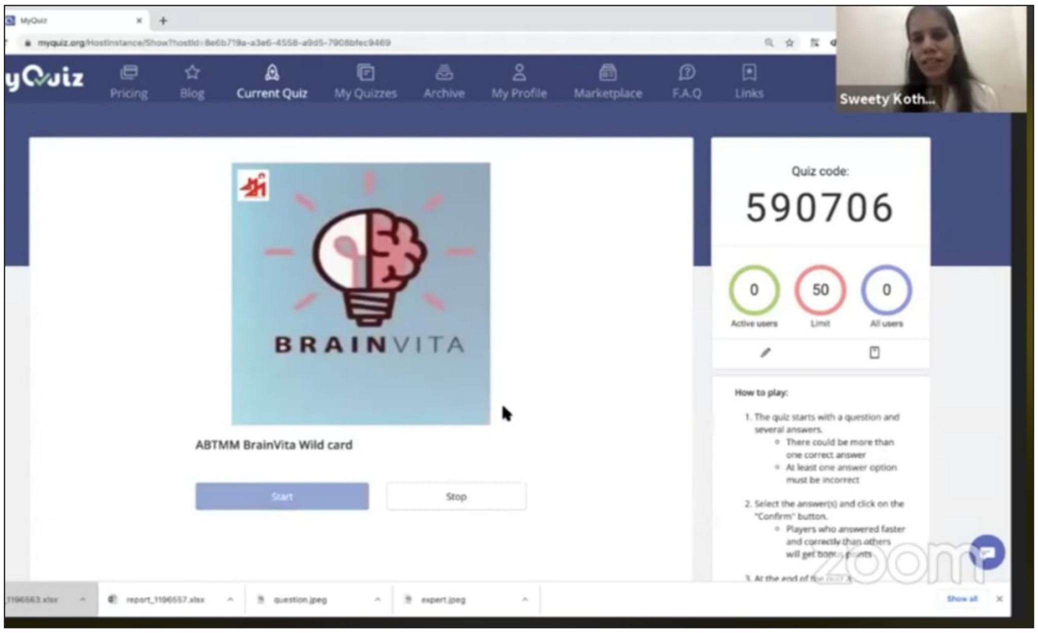

सर्व प्रथम गुरूदेव के मंगलपाठ से शुरुआत हुई। उसके पश्चात् अभातेममं अध्यक्ष श्रीमती पुष्पाजी बैद के शुभकामना स्वर से क्वीज का प्रारम्भ हुआ। मुंबई से स्वीटीजी कोठारी ने इस क्वीज को बहुत ही सुंदर तरीके से संचालित किया। ब्रेनविटा क्वीज संयोजिका श्रीमती जयश्रीजी जोगड़ ने न सिर्फ पूरे वर्षभर सभी को अपनी मेहनत व लगन से जोड़े रखा अपितु ग्रांड फिनाले को सफल बनाने के लिये बहुत ही मेहनत की। सोनमजी वागरेचा, कांताजी डुंगरवाल, श्रीमती पुष्पाजी बैंगानी का भी सहयोग रहा। राष्ट्रीय महामंत्री तरुणाजी बोहरा ने सभी को शुभकामनाएं प्रेषित की । तथा इस ब्रेनविटा क्वीज को वर्षभर सुव्यवस्थित चलाने के लिए श्रीमती जयश्री जोगड़ को बहुत बहुत आभार व धन्यवाद के शब्दों से उनका सम्मान किया।

आभार कांताजी डुंगरवाल ने ज्ञापन किया। सभी के सहयोग के लिए बहुत बहुत धन्यवाद। यह क्वीज ज़ूम व फेसबुक लाइव भी देशभर में चली । जिसमे

प्रथम- रेखा धाकड़ (मुंबई)

द्वितीय- विजयश्री ललानी (जलगांव)

तृतीय- संतोष वेदमूथा (हुबली) से रहे।

सभी ने इस कार्यक्रम की सराहना की ओर कहा कि बहुत ही ज्ञानवर्धक कार्यशाला रही।

ज्ञान चेतना प्रश्नोत्तरी
दिसम्बर 2020

संदर्भ पुस्तक – धम्मो मंगलमुक्किठं पृष्ठ संख्या 22 से 39
सुखी बनो पृष्ठ संख्या 18 से 32

(अ) केवल एक शब्द में प्रश्नों का उत्तर दो –

1. व्यक्ति किसकी वांछा करने से अमूल्य अवसर खो देता है।
2. सुग्रीव के अनुसार कैसे लोगों के लिए लंका दूर है?
3. किस में उपस्थित होने से संकल्प, विकल्प और दुःख का नाश हो जाता है?
4. घो. ची. पू. ली. में पू का अर्थ क्या है?
5. ज्ञान का हेतु किस कर्म का विलय है?
6. वह महारानी कौन थी जिसने आत्महत्या करने का निर्णय लिया।
7. मैं जैन धर्म निर्दिष्ट मृत्युविधि से मरना पसंद करूंगा – यह किसने कहा?
8. गीताकार के अनुसार स्थित प्रज्ञ बनने के लिए किससे मुक्त होना होगा?
9. ईषत् प्राग्भारा नामक पृथ्वी किस आकार में अवस्थित है?
10. सीता का हरण रावण ने किया है, यह जानकारी देने वाले विद्याधर का नाम क्या था?
11. अनासक्ति नंदनवन है तो आसक्ति क्या है?
12. कौन सा यात्रा पथ लम्बा होता है?
13. सर्वश्रेष्ठ एवं उच्चतम अनशन कौन सा है?
14. अहंकार को प्रतनु करनेवाली भाव अवमोदरिका का नाम क्या है?
15. यदि राग के समान दुःख नहीं है तो किसके समान सुख नहीं है?
16. त्रिवर्ग में अर्थ, धर्म के अलावा तीसरा तत्व क्या है?
17. श्रीमद् जयाचार्य ने कौन से ग्रंथ में बताया कि व्यक्ति के अपने ही पुण्य पाप सुख-दुःख के कारण बनते हैं।
18. अगर अहंकार और ममकार सैनिक है तो राजा कौन है?
19. प्राकृत साहित्य के अनुसार पुण्य से घर में धन होता है तो धन से क्या होता है?
20. हमें आसक्ति से चलकर कहां तक पहुंचना है?
21. जयाचार्य रचित एक गीत के अनुसार शासन को किसकी उपमा दी गई है?

नोट :
- प्रश्नों के उत्तर *Google Form* के द्वारा भेजने रहेंगे। अंतिम तिथि 25 दिसम्बर है।
- *Google Form* की *Link* आपको *Team Group* में प्रेषित कर दी जायेगी।
- सभी शाखा के अध्यक्ष/मंत्री से अनुरोध है कि *Link* अपनी शाखा के सदस्यों तक पहुँचाये।
- प्रश्नोतरी में संभागी बहिनों से अनुरोध है कि *Link* के लिए अपने अध्यक्ष/मंत्री से सम्पर्क करें।
- अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें –

श्रीमती मधु देरासरिया, सूरत
मो. : 9427133069 E-mail : madhujain312@gmail.com

नवम्बर माह के उत्तर

(अ) मुझे पहचानो -

1. हिंसा	2. विनय	3. मोह	4. समता
5. आदमी	6. गु	7. अनुशासन	8. केवलज्ञान
9. ज्ञान	10. गीताकार		

(ब) रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए -

1. अनजान	2. अवस्था	3. आश्रव	4. अवशेष
5. आगमन	6. अनुप्रेक्षा	7. अमन	8. आकाश
9. अनन्त	10. अजीव	11. अघाती	12. अशुभ
13. आश्रव	14. अजीवात्मक	15. अभव्यता	

अक्टूबर माह के भाग्यशाली विजेता

अक्टूबर माह में कुल 2257 प्रविष्टियां प्राप्त हुई।

1. श्रीमती कविता मेहता - जसोल
2. श्रीमती नीतू खमेसरा - उदयपुर
3. श्रीमती राजरानी जैन - जयपुर शहर
4. श्रीमती बेला बैद - अहमदाबाद
5. श्रीमती विमला देवी दुगड़ - कांदिवली-मुंबई
6. श्रीमती मनिषा जैन - सूरत
7. श्रीमती शीखा पालगोता - बालोतरा
8. श्रीमती संगीता आंचलिया - उधना
9. सुश्री भव्य बैद - दिल्ली कन्या मंडल
10. सुश्री प्रेक्षा जैन - इन्दौर कन्या मंडल

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल को मिलने वाला अनुदान

51,000 श्रीमान् सज्जन कुमारजी-रमा देवी जैन दिल्ली-भिवानी द्वारा भावना चौके में सप्रेम भेंट।

21,000 श्रीमती पुष्पा रूचिका डागा गंगाशहर-बैंगलोर द्वारा भावना चौके में सप्रेम भेंट।

21,000 श्रीमती पिस्ता बाई, शान्ति, प्रदीप, निशा, प्रतिक्षा, कबीर सलेचा राणावास-बैंगलोर द्वारा भावना चौके में सप्रेम भेंट।

21,000 श्रीमती जतन देवी सिंघी अपने प्रपौत्र एवं श्रीमती कान्ता-चन्द्रभान जी, श्रीमती जया-सुरेन्द्र जी सिंघी द्वारा अपने पौत्र जन्मोत्सव पर सप्रेम भेंट।

21,000 श्रीमान् संतोष कुमार - माया देवी कातरेला-चैन्नई द्वारा भावना चौका में सप्रेम भेंट।

21,000 स्व. श्रीमान् हाथीमलजी दुगड़ (फतेहपुर - जयपुर) की स्मृति में श्रीमती विमला दुगड़, श्रीमती रश्मि-नितिन गोलछा, श्रीमती श्वता - रवि लोढ़ा द्वारा सप्रेम भेंट।

11,000 श्रीमती सायर-पुखराजजी बाफना सरदारशहर-किशनगंज द्वारा भावना चौके में सप्रेम भेंट।

11,000 श्रीमती सरोज, अलका चौरड़िया बीदासर-बैंगलोर द्वारा भावना चौके में सप्रेम भेंट।

11,000 श्रीमती कमला देवी-फतेहचन्द भंसाली छापर-दिल्ली द्वारा भावना चौके में सप्रेम भेंट।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा सभी अनुदानदाताओं के प्रति हार्दिक आभार !

अध्यक्षीय कार्यालय : श्रीमती पुष्पा बैद - ''पावन'' बी-106/107, विद्युत नगर-बी, क्वीन्स रोड़, जयपुर - 302021
मो. : 9314194215, 8209004923 ईमेल pushpabaid312@gmail.com

महामंत्री कार्यालय : CA तरूणा बोहरा - 301, साधना पैलेस, मराठा कॉलोनी, दहिसर (पूर्व) मुम्बई - 400068
मो. : 8976601717 ईमेल tarunajain365@gmail.com

कोषाध्यक्ष कार्यालय : श्रीमती रंजु लुणिया - लुणिया मार्केटिंग प्रा. लिमिटेड, बड़ा बाजार, छेरा बस स्टॉप के पास, शिलोंग-793001 (मेघालय) मो: 94361033330, 8787645164 ईमेल lmplshillong@gmail.com

नारीलोक संपादन सहयोगी : श्रीमती गुलाब बोथरा मो : 9462342976

नारीलोक देखें website : www.abtmm.org